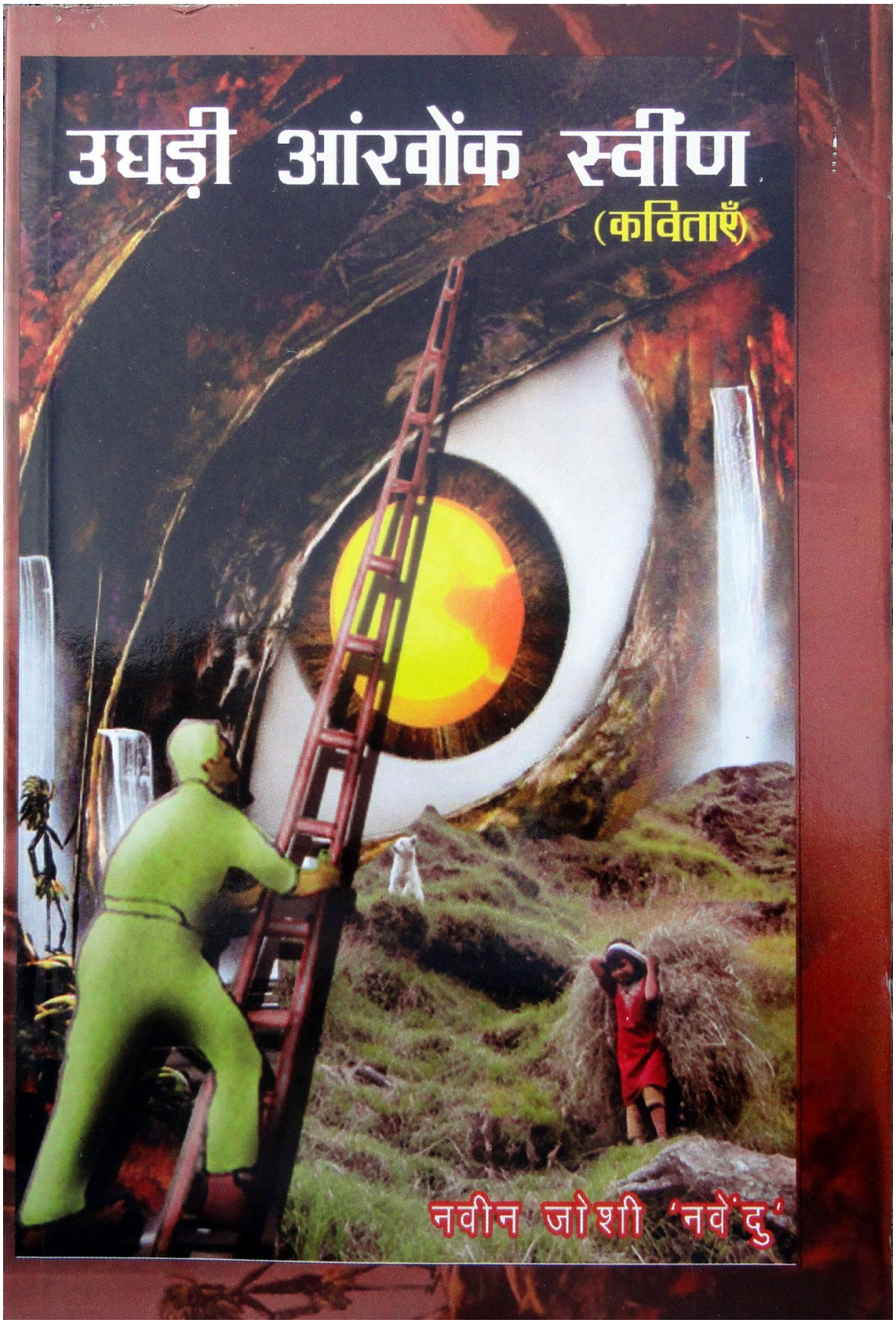

उघड़ी आंखोंक स्वींण

(कविताएँ)

नवीन जोशी 'नवेंदु'

स्वत्वाधिकार :
नवीन जोशी 'नवेंदु'

© नवीन जोशी 'नवेंदु'
पहला संस्करण 2013

प्रकाशक :
जगदम्बा कम्प्यूटर्स एण्ड ग्राफिक्स
5/71, नियर एन.सी.सी. क्वाटर्स, हल्द्वानी
दूरभाष-9997186561

मूल्य : 250 रुपए मात्र

Ughadi Aankhok Sween
By:
Navin Joshi 'Navendu'
Contact: 9412037779
Email: saharanavinjoshi@gmail.com

समर्पण

इज स्व. श्रीमती हेमलता जोशी, इष्ट-मितुरों, स्वार-बिरादरों, कब्बै-कसिकै संपर्क में आई और कुमाउनी बोलि-भाष दगै प्यार करंणी सब्बै लोगों-पाठकों के सादर समर्पित

-नवीन जोशी 'नवेंदु'

आमुख

एक जमा्न में चंद राज वंशैकि राजभा्ष और भारतीय संविधानैकि अठूं अनुसूचि में शमिल हुंणैकि तैं आपंण मजबूत दा्व ठोकंण हुं तैयार कुमाउनी भा्ष में म्यर पैल काव्य संकलन 'उघड़ी आंखोंक स्वींण' आपूं हातों में छू। इकें आपूं हातों में सौपंण में म्या्र हि्य में कतू खुशि, कस कुलबुलाट हुंणौ, मैं बतै न सकनयूं। पर, यो साफ कर दिंण चानूं, कि मिं क्वे ठुल कवि, लेखार न्हैत्यूं, और मैं आपंणि कवितान कैं पुर तौर पारि आपंण लै न समझनूं। किलैकि मैं माननूं कि असल में हमा्र लेख, कवित्त इकलै हमा्र न हुन, बल्कि हमा्र पुर समाज, परिवेश, प्रदेश, देशा्क, हमा्र इष्ट-मितुरों, स्वा्र-बिरादरों और कब्बै-कसिकै संपर्क में आई सब्बै लोगोंक लै हुनीं। किलैकि हमिं जि लै लेखनूं, उ हमा्र भितेर बै उं। म्या्र कवित्त लै यसीकै पैद हई छन। समाज में हुंणी कएक घटना मिकें भितेर बै लेखंण हुं घजबजूनीं और मिं आपूंकें रोकि न सकन। म्या्र भितर जि लै छू, भल या नक, समाजै कै देई, समाजै कै भुगत्याई छू। मैंल सबै तिर य समाजै बै समेरि राखौ, य वास्ते इकें समाज कें लौटूंण म्येरि जिम्मेदारी छू। मैं के न रचि सकनूं, केवल ब्रह्मा ज्यू रचि सकनीं, जनूं दगाड़ सरस्वती माता रें। मैं पारि उनरि कृपा छू, मैं उनूंकैं यो संकलन शुरू करंण है, और सबूंहै पैली दंडवत पैला्ग करनूं।

'उघड़ी आंखोंक स्वींण' म्या्र स्वींणै छन, जो मैंल उघड़ी आंखोलै देखि राखीं। यानी कि हूंणौ और कि हुंण चैं, म्येरि कोशिष रूं कि एक पत्रकारैकि भें, क्वे समस्या उठाई जाओ त वीक समाधान लै सुझाई जाओ। बहरहाल, यो संग्रह में जतू लै पाठ छन, उं मैंल उ बखत लेखीं जब मैं ना्नतिन्योई बटी जवानिक दौर में जा्ंण ला्ग रौछि्यूं। सो मन में प्रकृति और सुंदरताक बारि में जो चित्र छी, या दगाड़ै देश-प्रदेशैकि व्यवस्थाओंक खिलाफ जो गुस्स छी, उं आफी-आफी भ्या्र निकलीं। और यो कविता रूप में सैद यो वास्ते निकलीं कि यं म्या्र बाबू कवि, लेखक, संपादक श्री दामोदर जोशी 'देवांशु' ज्यूक परसाद छन, जो म्या्र पैद हुंण है बै लै पैली इंटर में पढ़ण बखत बटी कविता लेखंणई। उनर पैल कुमाउनीं कविता संग्रह 'कुदरत' १९६९ में प्रकाशित है गोछी। उनर परसाद और हात म्या्र ख्वार पारि हमेशा रओ, भगवान थें यै प्रार्थना छू। उनूंलै आज म्या्र 'आ्ब-आ्ब' कून-कूनैं लै यो किताब खुदै छ्पवै हाली। उनूं दगा्ड़ आज लै आपंण आर्शीवाद् छत्त म्या्र ख्वा्र पारि धरी दुसर विश्व युद्धा्क सेनानी ९९ बरसा्क बड़बाज्यू श्री देवी दत्त जोशी, आ्म श्रीमती पार्वती जोशी और इज स्वर्गीय हेमलता जोशी, जनूंल यो ज्यूनि और हात में कलम दिबेर मकें यो लैक बड़ा, उनूं वास्ते म्या्र पास कूंणा्क तें आंखर न्हैतन। आपंण भै-बैंणी विनय प्रभा, आभा, नितीश, पत्नी बीना, पुत्र वैभव और पुत्री काव्या क प्रति लै मैं आभारी छूं, जनर क्ये न क्ये रूप में य संकलन कें छ्पूंण में भौत योगदान छू। मैंल लै कक्षा-आठ बटी तुकबंदी कविता लेखंण शुरू करि हैछी और हाइस्कूल-इंटर (१९८५) बटी म्येरि कविता अल्माड़ में स्वाधीन प्रजा और हिलांस आदि पत्र-पत्रिकान में छ्पंण लागि ग्येछी। अघिल आंखर पत्रिकाक (लखनऊ, सन् १९९४) संपादक आदरणीय बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु' ज्यू और दुदबोलि पत्रिकाक संपादक आदरणीय मथुरादत्त मठपाल ज्यूल (रामनगर, सन् २०००) म्येरि कविताओंकि जो बड़नत करी, वील म्या्र उत्साह कें अगास पुजै दे, म्या्र कवित्तनैकि गाड़ कें गंग बणूंण में उनर भौतै ठुल योगदान छू, जै है मैं कब्बै उरिण न है सकनीं। मठपाल ज्यूल म्येरि कवितान हूं 'एक नोट' ल्येखि बेर लै मिं प्या्रि इतू लाड़ खन्यै जस हालौ, कि में धन्यवाद कै बेर उना्र उपकार कें कम न करि सकनू। में यो संग्रहैकि भूमिका लेखणा्क तें एम. बी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वाणि में हिन्दीक एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रभा पंत ज्यूक लै दिल बटी आभारी छूं, जनूंल इतू गंभीरताल म्यर य काम पुर्‌यै दे।

एक और बात मैं जरूर बतूंण चानूं कि मैंल यो कविता करीब १५ साल पैली, क्वे हल्द्वाणि-नैन्ताल में पढ़ाइ और उत्तराखंड आंदोलना्क दौर में तो क्वे दिल्ली और नोएडा में इंजीनियरिंगैकि नौकरीक दौरान

करीब १६-१७ बटी २५ सालैकि उम्र में लेखी हुई छ्न। लेखंण म्यार खून में छी, सो सन् २००० में आपंण राज्य बनते ई इंजीनियरिंगिकि 'कमाऊ' नौकरी कें छोड़ि बेर घर 'कुमाऊं' हुं 'भ्वाजि' आयूं कि दूसरोंक किलै, आपंणि मिहनतैल आपंणै घर सजूंल। यो बात मैं यो कारणैल बतूणयूं कि एक त पाठकों कें म्यर कविता रचणाक बखतक म्यर वैचारिक स्तरक पत्त चलि जाओ, दूसर यो कि सैद मैं आपंण दौराक सबूं है युवा कुमाउनीं कविन में शामिल छूं । इमें मैं आपंणि क्वे बड़नत न माननूं, पर यो बतै बेर नई पीढ़िक युवा कविन थें कूंण चानूं कि उं लै हिंदी या अन्य भाषोंक दगाड़ आपंणि दुदबोलि कुमाउनी में लै लेखना भल हुंन। आज, मैं पत्रकारिता में छूं, और य कूंण में लै मकें के शरम न्हें कि आज मैं कुमाउनीं कि, हिंदी में लै कविता न लेखि सकनयूं। सैद यो कारणैल कि आज म्यार भितर यो कविता लेखणाक जमानौक जस उमाव न्है। आज मैं आपंण भितराक विचारों कें आपंण लेखूं में प्रकट करि दिनूं, फिर कवित्त लेखंणाक तें जस विचारोंक जोश चें, उ न बचन।

यो संग्रह कें छापंण में म्येरि कोशिश सिरफ इतू छू कि हमैरि दुदबोलि कुमाउनिकि जब लै कैं बात हओ, क्वे उकें कमजोर न कै सकौ। यो संग्रह कुमाउनीं भाष-साहित्याक भनार में मणीं लै बढ़ोत्तरी करि सकल, इमें मैं आपंण सौभाग्य समझुंल। म्यार यो संग्रहैकि क्वे कविता में कत्ती कविताक अंश देखीनीं, कि नैं, यो साहित्याक पंडितै तय कर सकनीं, पर म्येरि कोशिश सिरफ इतू छू कि मैं जो धरती में पैद है रयूं, वीक लिजी आपंणि 'औकात', अकलाक मुताबिक ज्यादे है ज्यादे जि दि सकूं, दियूं। आपंणि धरती माताक दूध, माटक कर्ज चूकूंण म्यर धरम भै। अघिल, हमैरि कुमाउनीं भाष कें, इकें बुलांणी, प्यार करंणी युवाओंकि, नई पीढ़िकि और युवा कवि-लेखकोंकि भौत जरवत छू। किलैकि आज कुमाउनीं लेखणंई कवि, लेखकोंकि परंपरा, उनार काम कें अघिल बणूंणी हात चैनीं। यो परंपरा उरातार आगे बड़ते रूण चैं, योई माता शारदे, दुदबोलि कुमाउनी थें प्रार्थना छू।

ऐल इतुकै, प्रतिक्रियाओंक इंतजार रौल ।

नवीन जोशी 'नवेंदु'
ब्यूरो प्रभारी, राष्ट्रीय सहारा, नैनीताल।

संपर्कः 9412037779, 9675155117,

ईमेलः saharanavinjoshi@gmail.com

होलि, 28 मार्च, 2013

भूमिका

कत्ती लै, क्वे लै काम-काज किलै नि हो, कविता सुणन और सुणूँन बरबखत सबूँकैं भलै लागूँ, पै पत्त नैं कविन कैं देखि लोग ख्ार किलै ख्ानीं, उनुकैं देखि लुकण किलै फै जानी? यौ त भै सोचणी बात, समझणी बात यौ छ, जब हम 'कविता' यौ आँखर कैं पड़नूँ, सुणनूँ, लेखनूँ या कूँनूँ, त यस लाग्ूँ यौ आँखर स्त्रीलिंग छ, और जब 'काव्य' कूँनूँ, त उ पुल्लिंग जस चिताईण फै जाँ। कविताक अ)नारीश्वर ज्ास कल्याणकारी गुणन्ाक वीलै जब हम उकैं मलिये मली चानूँ, त पद्य में हमूँकैं उ सब गुण देखीनी जो एक स्यैणि में और एक बैग में हुनीं, येकै वील कविता कभै बड़बाज्यूकि च्ारि मैक्यूँण,देखीं, कभै आ्मैकि च्ारि हुल्यारि लगूँण जसि चितायीं कभै बाबूकि च्ारि नड़क्यै, कभैं इजै्कि च्ारि डाड़ ह्ालैं, त कभै ह्यून्ाक घाम जसि निमैलि लागैं। मल्लब यौ छ, एक न्ानि-न्ानि कविता मैं लै एतुक तराण हूँ कि उ, ऊ सब कर सकै, जकैं ठुल-ठुल भाषण और किताब लै नि कर सकन। कविता मैंसै्कि यसि दगड़ू हैं, जो हर हाल में आ्पण दगड़ूवैकि मदत करैं।

कुमाउँनी साहित्य में कविता कूँण-सुणन तब बै है रौ, जब लेखण हूँ नै त कागज छी, नै कलम ओर नै स्याइ। हम्ार खुड़ आ्म-बड़बाज्यूक आम-बुबु लै जब औरी खुशि हुँछी, तब गीत गाँछी और जब उनुकैं अत्ती उदेख ल्ाग छी, तब लै उँ गीतै गाँछी, उन्ौर आपण गौ-घर्ाक ईष्टौक नाम लिण में लै अणबणाइए क्वे-नै-क्वे गीत बण जाँछी। गीत और कविता में के ज्यादे फरक न्हाती, द्वीनै कैं तुम साँक्कै भै-बैंणी समझो, किलैकि द्वीन्ाक आङ में बगै त एक्कै खूनेकि गंग, उनुकैं एक्कै बोट्ाक द्वी फल या फूल कूँछा भलै, या फाङ जे लै कूँछा, जड़ त एकै हुनेर भै द्वीनै्की, अगर कविता और गीत कैं एक्कै गाड़्ाक द्वी किन्ार समझछा, पै लै द्वीन्ाकै बीच में बगै एकै भावनाकि गंग।

जब बै 'कुमाउंनी और गढ़वालि भाषा' कैं संविधानै्कि अठूँ सूची में जो्ड़नै्कि बात जोर-शोरै्ल उठण ल्ागी, तब बै वाल-प्ाल कुँणन में लुकी-भैटी कुमाउँनी साहित्य लेखणी आ्पणि-आ्पणि नई-पुर्ाणि पुन्तुरिनल कैं खो्जि-ख्ाजि, टट्क्ये-टुट्कीबेर छ्पूण फै ग्यीं। आ्ब जै दुणीं कैं पत्त ल्ागनौ, क्ास-क्ास स्यैणियाँ और बैग छन हम्ार उत्तराखण्ड में एक-है-एक दिमागदार और लेखण-पढ़नी। कभै-कभै सोच ज्ास पड़नी, पत्त नै आइ ज्ाणै यौ सब काँ दुरूपना लुकबेर भैरौछी, किलै नि करछी आ्पणि दुदबो्लिक मान-सम्मान। पंजाबि, बंगालि, गुजर्ाति और लै कतुकै भ्ाष बुलाँणनियाक च्ारि और किलै नि लेखछी उनरि च्ारि। भल हौ उन्ौर, जनुल सबुहै पैली यो जागर लगैत्र आ्पणि दुदबो्लि कैं परेम करण सिखा, हुस्काहुस्की इ सई कम-से-कम हम साहित्य लेखणै्कि दौड़ में त ल्ागी गयाँत्र देरै में सई अकल त ऐ हम उत्तराखण्डियाँ कैं आ्पणि दुदबो्लिकि इज्जत करणै्कि। यौ बात अलग छ, आज लै उकें बुलाँ्ण में शरमै ल्ागै हमुकैं, तबै त जब क्वे पहाड़ या गौ-घरन बै भ्यार ऊँ, उ हिन्दी बुलैबेर आ्पण रौब जमूँण देख्यीं। येक कारण यौ छ कि गौ-घर बै आई अनपढ़ या कम पढ़ी-लेखी मैंस सोचूँ, अगर मैंल ये दगड़ि कुमाउँनी में बात करि, त यौ मैकैं आपूँ है कम समझौ्ल और शहरौ्क पढ़ी-लेखी मैंस सोचूँ, जब मैं अंग्रेजी में बात करूँल तब म्ये्रि ज्यादे इज्जत ह्वलि। पै, एक बात त पक्की छ, द्वीनै्कैं यौ बात याद नि रूँनि कि बो्लि या भ्ाष्ाक काम त बस एक मैंस्ाक मनै्कि बात दुहर मैंस जाँणै पुजूँणौ्क छ।

जसिक रुड़िन में जब आमौ्क बोट फुलूँ उ बखत वीक फूल कैं देखि यौस चिताईं, पत्त नै आ्लिबेर कतुक जै आम ल्ागणीं छन, पर आखिर में उ बोट्म उतुकै आम बची देखीनीं जनुनमें ह्ाव, बय्ाव, और डावनै्कि मार कैं सहन करनै्कि तागत हैं। उसिकै, आज कुमाउँनी में गद्य और पद्य लेखणियाँ्ण क्वे कमि न्हैती, उनुन में है कतुक कब जाँणै रूँणीं यौ त बखतै बताल। अस्तु....

कुमाउँनिक नई कविन में जो एक नाम आ्इ जुड़नी छ, उ छ-नवीन जोशी 'नवेंदु'। श्रीमती हेमलता और श्री दामोदर जो्शि ज्यूना्क सुपुत्र, नवीन ज्यूक जनम त छब्बीस नवम्बर उन्नीस सौ बहत्तर (२६.११.१९७२) में हौ, पर उनुमें 'नवेंदु' की जुन्या्लि जसि देखींण ला्गी तब बै-जब यौं कक्षा आठ-नौ में पढ़छी। नान्छ्ना जब कभै यौं कविता लेख छी, त महापुरुषन पर या देशभक्ति पर लेखछी। लिपि त तब लै देवनागरी इ छी, भा्ष हिन्दी छी, मल्लब यौ कि ज्यादेतर कवि और लेखकना्क चारी इनुल लै कविता लेखणै्कि शुरूआत हिन्दी बै इ करी, पछा कुमाउँनी में लेखण ला्गीं। कुमाउँनिक गद्य साहित्यै्क किताबनौ्क सम्पादन करण में लै यौ आ्पण बाबूकि मदधा करनीं, आखिर बाबू धौं मिली गुणै त छन, जो आज नवेंदु नव सृजन करनयीं। कुमाउँनी गद्य संग्रह 'गद्यांजलिक' अलावा पत्र-पत्रिकान में लै इनरि रचना प्रकाशित हुनै रुनीं । जब यौ 'पॉलिटैक्नीक नैनीताल' बै मैकैनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करनौछी, तब लै इनुल आ्पण कॉलेजै्कि स्मारिका में छात्र सम्पादका्क रूप में लै काम करौ। ऐल यौं समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा' नैनीताल में पत्रकारा्क रूप में सेवा करणयीं।

'उघड़ी आखोंक स्वीण' यौ कवितानै्कि पुन्तुरि नै पुर गढ़्व छ, जमैं भाव और विचारना्क मोत्यूंल गछींण कतुकै किस्मैकि रंग-बिरंग मा्व भरी छन। जब मैंस ज्वान हूँ उबखत वीक आङ में अत्ती तराण हूँ और मनस्वा्प लै तब उ भौत कुछ करण चाँ और जब नि कर पान तब, क्वे त हुलार हूँ बा्ट लागूँ और क्वे उकाव हूँ कविता लेखण लै उकाव हूँ जाँणी एक बा्ट छ। स्वीण त सबै देखनीं क्वे सिती में त क्वे ब्यूँज में। जो बरबखत बंद आँखन स्वींण देखनीं, उँ जाँ छी उत्ती रै जाँनी पै जो स्वींणन कैं उघड़ी आँखूल देखनीं, उनुकैं आ्पण स्वींण पुर करणौ्क क्वे-न-क्वे बा्ट मिली जाँ।

जब कभै कैकैं उ करणौ्क सुबत या बा्ट नि मिलन, जो उ करण चाँ तब उ आ्पण या परया्क स्वींणाकैं पुर करणा्क लिजी, उनरि पीड़ कैं कम करणा्क लिजि क्वे नइये बा्ट खो्जि लिनी। आ्पण या दुहरै्कि मनैकि पीड़, रीस, शिकैत, भगती और पिरेम जा्स भाव तथा समाजै्कि दुर्दसा्क लिजी जिम्मवार लोगूँकि करतूतन कैं उघा्ड़ि दुणिया्क सामणि ल्यूँणा्क लिजी, क्वे कविता-गीत लेखनी क्वे चित्र बणूँणी, क्वे पेन्टिंग करण जस क्वे लै दुहर बाट कैं अपण्यै लिनीं। साँचि त यौ छ नई बाट कैं बणूँणी उइ लोग छी और आज लै छन, जो दुणी में के करण चाँछी या करण चानीं जनुल कभै उघड़ी आँखन क्वे स्वींण देखौ, या देखनयीं। कविता लेखण लै समाज कैं मनकस बणूणौक या समाज में बदलाव ल्यूँणौ्क एक बा्ट छ।

यौ कविता संग्रह में समसामयिक विषयन पर कटाक्षै नै प्रतीक और बिम्ब लै छन। कत्ती-कत्ती दर्शन लै देखी जाँ। उनरि **'लौ', 'पत्त नै', 'रीड़', 'असल दगड़ू'** कविता यैक भल उदाहरण छन। जाँ एक तरप नवेंदु ज्यूल **'दुंङ', 'तिनाड़'** जा्स प्राकृतिक उपादानूँ कैं कविताक विषय बणै राखौ, वायीं दुहरि उज्याणि **'हू आर यू', 'कुन्ब', 'किलै', 'तरक्की', 'हरै गो पिरमू', 'भ्यार द्यो ला्ग रौ हो', 'मैंस अर जनावर, 'अगर', 'परदेस जै बेर'** जसि कवितान में मैंसना्क मनोविज्ञान लै उघाड राखौ। एतुकै नै, एक पढ़ी-लेखी दिमागदार मैंसा्क चा्रि, उ लै समानताक लिजी महिला सशक्तिकरण के जरूरी मा्ननीं। तबै त उँ **'तु पलटिये जरूर'** कैबेर, च्येलि-स्यैणियाँक मन बै गुण्ड, लोफरनौ्क डर निकाउनै्कि बात कूँनीं और उनुकैं अघिल बढ़नौ्क बा्ट बतैबेर उनुधौं आ्पण तराण पछ्याणन हूँ कूँनीं-**"तु जे लै पैरि/ला्गली बा्ट/घर बै/घर बै इ/ला्गि जा्ल गुण्ड/त्या्र पछ्लि....बस त्या्र पलटण तलक/और मैकैं फर विश्वास छु/तब त्वे में देख्येलि/उनुकैं झाँसिकि रा्णि/का्इ माता।"**

यमैं क्वे शक न्हैती कि प्रकृति होओ या हमरि जिन्दगि, रिश्त-ना्त होओ या खा्ण-पिण, संतुलन सब जा्ग जरूरी हूँ। जब-जब घर भितेर या भ्यार संतुलन बिगड़ूँ तब-तब हमौ्र पर्यावरण खराब हूँ, घर-परवार और समाजै्कि व्यवस्था लै गजबजी जैं। **'जड़ उपा्ड़'** में उ कूँनी-**"जब बिगड़ि जाँ/मणी**

म्यस/पाँणि लै/डाव बणिं/टोणि द्यूं/ड्वन कै/खप्ोरि/लगै द्यूँ/छ्ल घाम/घाम सुकै द्यू/पात पतेल कि/हुत्तै बोट कै।"

यौ साचि छ कि संसार कै देखण्ोक सबनोक आ्पण-आ्पण ढंङ हूँ, पर ज्यूँन रूँण्ाक लिजी उमीदैकि सबुन कै जरूरत है। अगर मैंस कै **'उमींद'** नि होओ, त उ आपणि भितेर लिई साँस कै भ्यार निकाउँण में लै डरन। उ भलीभाँ ज्ाणूँ कि अन्यारा्क बाद रोज उज्याव हूँ और जुन्यालि रात्ाक बाद अमूँस जरूर ऐं, तबै त उकै आ्स ला्ग रै अमूँस्ाक बाद ज्यूँनिकि-**'रडिल पिछौड़ में/आँचवा मुणि छ्ोपि/रडिल करि दय्ेलि/फिरि आङ ला्गि/अङवाल भरि/उज्यायि करि दय्ेलि-ज्यूँनि।"**

जब लै कैकै मनम पीड़ है, त वीक आँखन बै आँसु च्वी जानीं और जब कभै उ जसिक-तसिक आपण आँसुन कै पि लै ल्यूँ, तब लै उ मनैमन डाड़ हालनै रूं। जसिक द्यौक पाणि धारती कै नवै-ध्वेबेर वीक धूल-मा्ट सब साप करि द्यूँ और उ हरिपट्ट देखीण फैजै, अगास में ला्गी बादव जब बरसि जानी त उ लै हल्क हैबेर इत्थै-उत्थै उड़ि जा्नीं। उसिकै जब मना्क अगास में उदेखा्क बादव ला्ग जानीं, तब आँख बै आँसु बरसिबेर वीक मन कै कल्ल पाड़नीं। पर, नवेंदु ज्यूंक बिचार एहै अलग छ्न, तबै त उँ **'डाड़ मारणैल'** कविता में कूँनी-

'कि हुं/डाड मारणैल/जि छु हुणी/उ त ह्वलै/के कम जै कि ह्वल, और लै सकर है सकूँ/फिर डाड़ किलै/फिर आँस क्ास/फिर लै/जि ऊँणई आ्ँस त/समा्इबेर धारि ल्हिओ/कबखतै-कत्ती/हँसि आ्लि अत्ती/काम आ्ल।"

'आँखर' उनरि एक प्रयोगात्मक कविता छ। यौ छ, कम आँखरन में ज्यादे कूँणी। नान्तिनन कै भल लागणी, नान्छना्कि नर लगूणा और 'घुघुती, बासूतिकि......फा्म दिलूणी जसि-**"भै जा भि मै/के खै ले/यौ दै खा/ए-द्धि 'पु' लै खा/ 'छाँ' पि/'घ्यू' लै खा/धौ कै खा।"**

'आदिम' कै पढ़िबेर उर्दू गजल कै पढ़नि जसि मिठी-मिठि लागै-**"उँच महल में आदिम, कतुक ना्न जस ला्गू/कतुक लै लम्ब हो भलै, बा्न जस लागूँ।"**

'काँ है रै दौड़' में उनूंल आजा्क समाजैकि भभरियोयिक जो का्थ लेख राखी उकै पढ़बेर लागूँ मैंस कै भगवानै्ल एतुक दिमाग दि रा्खौ, पै लै उ संसारा्क भूड़पना ओझी किलै रौ, जो सिद्द-साद्द बाट छ्न उनूमें किलै नि हिटन? जब सबूकै संसार गाड़ाक वार बै पारै जाण छ, तब मैसूंल यौ भजाभाज किलै लगै रा्खी? अगर मैस दुह्रनै्कि टाङ खैंचण है भल आपुकै समावण में ला्ग जाओ, त वीक मनौ्क आधू असन्तोष त उसिकै दूर है जा्ल-**"सब भाजणई-पड़ि रै भजाभाज/निकइ रौ गाज/करण में छ्न सिंटोई-सिंगार/अगी रौ भितेर भ्यार।"**

उसिक त टो्लि-बो्लि मारणी मैंस कैकै भल नि ला्गन, पै साहित्य में सिद्दी बात है भलि उ बात ला्गैं जो घुमै-फिरैबेर कई जैं। सिद्दी बात उतुक असर नि करनि, जतुक बो्लिकि मार करैं। सैद येकै वील साहित्यकारन कै व्यंग्यात्मक शैली में लेखण अत्ती भल ला्गूँ। यौ मामुल में **'उघड़ी आंखोंक स्वीण'** में कत्ती टपकी, काँयी चटैक छ्न और काँयी फचैक। **'ब्रह्मा ज्यूकि चिन्त', 'तु कूंछी', 'को छा हम', 'अच्याना्क मैस', 'झन पिए शराब', 'न मर गुण्ड', 'फरक', 'खबरदार', 'पनर अगस्ता्क दिन'** जसि कविता, का्नना्क बीच में खिली फूलनै्कि जसि औरी भलि देखींनी-

"आज छि छुट्टी/करौ मैल ऐराम/सेइ रयूँ दिनमान भरि/लगा टीबी/क्वे पिक्चर नि उणैछी/बजा रेडू/कैं फिल्मी गीत न उणाछी/सब ठौर उणाछी भाषण/द्रयखण पर्णी-सुणन पर्णी/सुण्यौ, भारत माताकि जैक न्हार/करीब सात म्हैण पछां/पैल फ्यार/छब्बीस जनवरिक पछां।"

ज्यून रूँणाक लिजी जतुक जरूरी हूँ आङ में खून, उतुकै जरूरी छ पाणि लै। दुणियाँक लिजी जतुक जरूरी छ दिन उतुकै रात लै, पराणिक लिजी जतुक जरूरी हूँ ऐराम, उहै नै कम नै ज्यादे, जरूरी हूँ काम लै। मैंसैकि ज्यूँनि में पिरेम भावैकि उई जाग छ, जो रेगिस्तान में पाणिकि और ह्यू में घामैकि। इज-बाब, भै-बैणि, दगड़ू-सुवा सबूक परेम आपण-आपण जाग उतुकै जरूरी छ, जतुक साग में लूँण और खीर में चिनि। जब मैंस ज्वान हुण लागूँ, वीक नान्छनाक स्वीण लै बुरूँसाक फूलूँक चारि खितखिताट करण फैं जानीं। नान्छना आमैकि राज-राणिक काथैकि राजैकि च्येलि, **'किरन परि'** बणि वीक मनम कुतकाइ लगूँण लागैं और उ करण लागूँ **'स्वीणैक क्वीड़'।**

जापानिक **'हाइकू'** हिन्दी में इ नै, अब कुमाउँनी में लै खूब देखीण-सुणीण फैं ग्यीं। अगर म्येरि जानकारि सई छ, त कुमाउँनी में हाइकू लेखणैकि शुरूआत सबुहै पैली ज्ञान पंत ज्यूल अस्सीक दशक में करि हाल छी, पछा उनरि किताब **'कणिक'** नामैल छापिणी। हाइकू लेखणैक प्रयोग नवेंदु ज्यूल लै करि राखौ-**"बंण बै बाग/शहर बै मैस्योलि/हरै ग्ये आज।"**

आखिर में, मैं नवेंदु कैं उनरि रचनात्मक समाजसेवा क लिजी बधाई दिनूँ। **'उघड़ी आंस्वोंक स्वीण'** उनार देखी स्यूँणा कैं पुर करैलि, यौ संग्रह में नवीन जोशि ज्यूल आपणि कवितान कैं एकबट्या राखौ। मकैं पुर विश्वास छ, उघड़ी आखूँक स्वीण पढ़नियाँकैं नवेंदुकि ज्यूनि, जुन्यालि रात जसि अङाव हालड़ी लागलि।

डॉ. प्रभा पंत
एसो. प्रोफेसर, हिन्दी
एम.बी.रा.स्ना.महाविद्यालय, हल्द्वानी

शुभकांक्षा के दो शब्द

'उघड़ी आंखोंक स्वींण' नवीन जोशी 'नवेंदु' द्वारा आचंलिक भाषा कुमाउनी में लिखा गया काव्य संकलन है। यह कवि का प्रथम कुमाउनी कविता संग्रह है। जो उसके एक स्वप्न की परिणति है। इससे पूर्व कवि की रचनाएँ छिटपुट रूप में पत्र-पत्रिकाओं सहित डॉडा कॉठा स्वर (काव्य संग्रह, ऑखर तथा दुदबोलि आदि में प्रकाशित होकर कुमाउनी साहित्य की थाती बन चुकी हैं।

कवि 'नवेंदु' ने स्वयं संघर्षमय अतीत देखा है। जीवन की जटिलताओं-विषमताओं और विद्रूपताओं से वे स्वयं दो-चार होकर आगे बढ़े हैं। भाषा प्रेम बचपन से रहा। आंचलिक भाषा को अपने उद्गम में ही उपेक्षित होते हुए देखा। जब पहाड़ी बोलने वालों को लोग 'गंवार' तक कह देने में नहीं चूकते थे। ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी कवि ने माता-पिता और समाज रूपी पाठशाला से कुमाउनी भाषा रूपी अमृत को अपने मन के कलश में भर लिया और उसे ही जन कल्याणार्थ व भाषा विकासार्थ लेखनी द्वारा अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

उघड़ी आंखोंक स्वींण' से तात्पर्य आंखों देखा यथार्थ है। कवि वास्तविकता के धारातल पर विश्वास करता है अतः उसकी कविता में कल्पना की उड़ान नहीं है। फूहड़ हास्य, अतिशयोक्तिपूर्ण अथवा अतिरंजित वर्णनों द्वारा वह वाहवाही नहीं लूटना चाहता। श्रृंगारिक दृश्यों के चित्रण से भी उसको ज्यादा लगाव नहीं है। शब्दों का ढकोसला उसे प्रिय नहीं। अतः उसकी कविता का प्रत्येक शब्द विस्तार लेने की क्षमता रखता है। वह आदर्श का नहीं यथार्थ का पक्षपाती है, और शाश्वत मूल्यों के प्रति प्रतिब) है। सत-असत की विवेचना किये बिना वह भावना के ज्वार में बहने वाला नहीं है। उसकी भाषा जनभाषा की कसौटी पर रखी उतरती है और जन-जन की समस्याओं को प्रतिबिम्बित करती है। स्पष्ट है उसमें जनभाषा की सहजता, स्वाभाविकता, अल्हड़पन और अनगढ़ता विद्यमान है।

कवि मानव के द्वारा खुली आंखों से देखे गये स्वप्न को साकार होना देखना चाहता है। इसके लिए वह दृढ़ संकल्प शक्ति, कठोर परिश्रम और अध्यवसाय को ब्रह्मास्त्र के रूप में प्रयोग करने की युक्ति बताता है। कवि की कविता में आमजन की व्यथा मुखरित होती है जो कवि को जनकवि होने के अभिधान के निकट ला खड़ा करती है। उसकी कविता बायवी न होकर जाग्रत और उतिष्ठित जीवन का सन्देश देती है।

कवि का मानना है कि आज आदमी कहीं खो गया है। इतनी भीड़ में भी वह पहचाना नहीं जा रहा। यहाँ वह नहीं उसकी छाया चल रही है। हिन्दू चल रहा है, मुसलमान चल रहा है, सिक्ख और ईसाई आदि रूपों में उसकी पहचान है। कबीर और गांधी कहीं दृश्यमान नहीं हो रहे हैं। नवेंदु का संग्रह मनुष्य को मनुष्य बनने का सन्देश देता है। वस्तुतः कविता संग्रह चरम शिखर पर पहुँच गये भ्रष्टाचार, कदाचार प्रदूषण, क्षेत्रवाद और आतंकवाद आदि के विरु) शंखनाद है। कवि आशान्वित है कि यह भेदभाव और जड़ता का कोहरा जल्दी हट छंट जायेगा। सद्बुि का सबेरा जल्दी प्रकट होकर मानव के मोह व स्वार्थ के संसार को अपनी किरणों की तलवार से छिन्न-भिन्न कर देगा। भारत का गौरव पुनः लौट आयेगा। भाषा के साथ विलुप्त हो रही अपनी संस्कृति भी पुनः फूलने-फलने लगेगी।

नवीन जोशी 'नवेंदु' अपनी माटी से जुड़े युवा व उत्साही साहित्यकार हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं का असली स्वर छिपा है। समाज की पहचान छिपी है और छिपी है गरीब, बेरोजगार, भ्रमित, श्रमित वर्ग की पीड़ा की प्रतिध्वनि। साहित्य के नव हस्ताक्षरों के लिए उनका रचना संसार एक दृष्टान्त है। उनकी प्रतिभा सतत् विकसित होती रहे और उनका भविष्य उज्ज्वल हो। इसी शुभकामना के साथ !

महाशिवरात्रि, १० मार्च २०१३

-दामोदर जोशी 'देवांशु' सम्पादक-गद्यांजलि
(पूर्व प्रधानाचार्य)

नवेंदु की कविता : एक नोट

कुमाउनी के युवा कवि नवीन जोशी 'नवेंदु' और उनकी कविता से मेरा पिछ्ले अनेक वर्षों से परिचय रहा है। उनकी कविताओं की विषय-वस्तु का स्पान बहुत विस्तृत है, जिसमें दैनिक जीवन की साधारण वस्तुओं से लेकर गहनतम मानवीय अनुभूतियां सम्मिलित हैं। वे बिना लाग-लपेट के अपनी बात कहने में समर्थ हैं। अनेक स्थानों पर भावों की ऊंची उड़ान भरने पर भी उनकी कविता अपनी सहजता-सरलता का त्याग नहीं करती। वे सरलतम शब्दों में मन के गहनतम भावों को प्रकट करने में समर्थ हैं। उनकी यही सामर्थ्य उन्हें अपनी उम्र से कहीं अधिक तक पेंठ करने वाले एक सशक्त रचनाकार का रूप देती है। वे कोरी लफ्फाजी नहीं करते। वरन, उन्हें जो कुछ कहना होता है, उसे वे ठोक-बजाकर, और अनेक स्थलों पर ताल ठोंक कर भी सरलतम शब्दों में पाठकों के आगे प्रस्तुत कर देते हैं।

मानवों के बीच के आपसी रिश्ते ठण्डे पड़ चुके हैं, और हर इन्सान जैसे इन्हीं ठण्डे रिश्तों को अपनी नियति के रूप में स्वीकार कर दुबका हुआ है। अपने बाहर वह एक सुरक्षा खोल सा ओढ१ कर दुबका हुआ है, और इसी में वह अपनी सुरक्षा समझ रहा है।

म्येसी गई मैंस/ बारमासी / अरड़ी रिश्त-नातन्ा्क अरड़ में/ इकलै बिराउक चार/ चुल्ा्क गल्यूटन में लै - अरड़

मानव केवल स्वप्न बुन रहा है। करने का सामर्थ्य होते हुए भी वह एक विचित्र प्रकार की तामसिक वृत्ति से घिरा है।

आफी बांदी खुद खोलंण, दुसरों कें चांणईं/बिन के पकाइयै, लगड़-पुरि चांणईं । - सब्बै अगाश हुं जांणईं

समय बहुत बलवान है। समय के साथ बहुत कुछ बदल जाता है। लड़ाई भी। शत्रु पक्ष बदल जाता है, लड़ाई का कारण, उसकी तकनीक, उसका उद्देश्य सब कुछ बदल जाता है-

लड़ैं- बेई तलक छी बिदेशियों दगै / आज छु पड़ोसियों दगै /भो हुं ह्वेलि घर भितेरियों दगै।

कवि के पास एक उत्कृष्ट जिजीविषा है, जिसके दर्शन हमें उसकी अनेक कविताओं में होते हैं। उसका मानना है कि घोर संकट के क्षणों में भी हमें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए-

पर एक चीज/ जो कदिनै लै/ न निमड़णि चैनि/ जो रूंण चै/ हमेशा जिंदि/ उ छू-उमींद/ किलै की-/ जतू सांचि छू/ रात हुंण/ उतुकै सांचि छू/ रात ब्यांण लै। - उमींद

'सिणुक' शीर्षक कविता में कवि एक सिणुक (तिनके) के भी अति शक्तिशाली हो सने के तथ्य को रेखांकित करता है-

जो् कान/ सच्चाइ न सुणन/ फोड़ि सकूं/ जो आ्ंख/ बरोबर न देखन/ खोचि सकूं/ जो दाड़/ भलि बात न बुलान/ उं दाड़न ल्वयै सकूं।

मानवीय सामर्थ्य के बौनेपर का अहसास कराने वाली कविता 'ज्यूंनि', जिसमें गजल की रवानी है-मुझे बहुत अच्छी लगी-

कूंणा्क तैं ज्यूनि, ज्यूं हर आदिम।/ सांचि कौ कूंछा-ज्यूनि बोकण जस लागूं/ उ ठेठर जो डाड़ मारि बेर सबूं कैं हंसूं / म्या्र आंखा्क पांणि में वी आदिम जस लागूं।

समाज का एक बड़ा वर्ग सर्वहारा वर्ग का है। वह एक तिनके की तरह कमजोर-निरीह-अल्पसंतोषी, आत्मसंतोषी है-

तिनाड़न कैं कि चैं ?/ के खास धार्ति नैं/ के खास अगास नैं/ के मिलौ/ नि मिलौ/ उं रूनीं ज्यून/ किलै, कसी ?/ बांणि पड़ि ग्येईं ज्यून रूंणा्क -तिना्ड़

'भैम' कविता में कवि का संदेश बहुत स्पष्ट है। दशहरे में फूंका जाने वाला रावण तो मात्र एक बहम है। फूंक सकते हो तो-

मेरि मानछा/ न बणाओ/ न भड़्याओ मरी रावण/ जब ठुल-ठुल रावण छन जिन्द दुनी में/ करि सकछा/ उनन कें धारो चौबटी में/ उनूं कैं भड़्याओ/ खाल्लि/ भैम भड़्यै बेर कि फैद ?

मनुष्य को मुंह तो खोलना ही होगा। आपाधापी और अनिश्चितता की आज की परिस्थितियों में यह और भी अधिक आवश्यक हो चला है। 'कओ' कविता में कवि आह्वाहन करता है-

कओ,/ जोर-जोरैल कओ/ जि लै कूंण छू/ पुर मनचितैल कओ/ तुमि चुप न रओ/ निडर-निझरक है बेर/ अपण-पर्या भुलि बेर/ पुर जोरैल/ हकाहाक करो।

आशा का स्वर-

ह्वल उज्या्व, अर ए दिन जरूड़ै ह्वल/ मिं जानूं-तैसि न सकीणी क्वे रातै न्हें -हम्ा्र गौं में

'उघड़ी आंखोंक स्वींण' कविता, जिस पर इस काव्य संकलन को नाम दिया गया है, आशावाद की एक श्रेष्ठ कविता है, इसकी एक अन्तिका देखें-

छ्जूणई ईजा्क थान कैं/ बाबुक पूर्व जनमा्क दान कैं/ झाड़णई झाड़/ छांटणई गर्द/ समावणई पुरुखनैकि था्ति/ चढ़ूणई फूल-पाति/ दिणई आपणि बड़/ हरण हुं दुसरोंकि टीस-पीड़/ राता्क धुप्प अन्या्र में/ मिं लै देखणयूं-उघड़ी आंखोंक स्वींण।

जीवन क्या है ? विषम परिस्थितियों में भी जी जाना ही तो-

चिफा्व सिमार बा्ट में लै, दौड़ छु ज्यूनि - ज्यूनि

फिरि लै-/ जि ऊंणई आ्ंस त/ समा्इ बेर धारि ल्हिओ/ कभतै कत्ती/ हंसि आली अत्ती/ काम आल - डाड़ मारणैल

कवि ने छन्द-मुक्त कविता, गीत, गजल, क्षणिकायें, हाइकू आदि विविधा रचना -शैलियों पर सार्थक रूप से अपनी लेखनी चलाई है। अनेक स्थलों पर बिम्बों और प्रतीकों का सहारा लिया है। अनेक अलंकार कवि की रचना में स्वतः आ गए हैं। कवि के पास एक समृ) कुमाउनी भाषा है। निम्न शब्द प्रचलन से हटते जा रहे हैं-

गल्यूट, घ्यामड़, उदंकार, असक, एकमही, अद्‌बिथर, कट्‌ठर, कुमर, भुड़, पांजव जैसे ठेठ ग्रामीण कुमाउनी शब्दों का व्यापक और सही स्थान पर प्रयोग हुआ है। अनेक स्थलों पर मुहावरों, लोकोक्तियों का सटीक प्रयोग हुआ है, यथा-किरमोई बर्‌यात, गुईं जिब्‌ड़, ब्याखुलिक स्योव, चोर मार, मरी पितर भात खवै, सतझड़ि करण, आंखन जाव लागण आदि।

नवेंदु जी को अपनी तरुणावस्था तक अपने जन्म स्थान कपकोट क्षेत्र के ग्रामीण परिवेश में रहने का अवसर मिला है। किसी भी भाषा को सीखने के लिए यही सर्वोत्तम आयु होती है। आगे चल कर कपकोट के बाहर भी उनको कुमाउनी परिवेश मिला। उनकी समृ) कुमाउनी का यही रहस्य है, जो आज की युवा पीढ़ी में कम ही दिखाई दे रहा है। फिर घर के भीतर उन्हें अपने रचनाकार पिता का सानिधय मिलता रहा, जिससे रचनाशीलता के लिए ललक और सामर्थ्य का निरन्तर विकास होता चला गया। उनके पिता श्री दामोदर जोशी 'देवांशु' हिंदी और कुमाउनी के एक सशक्त रचनाकार/ कवि हैं। स्वयं के लेखन और प्रकाशन के अतिरिक्त उन्होंन कुमाउनी रचनाधार्मियों के एकांकी, निबंधा, कहानी आदि संग्रहों का समय-समय पर सम्पादन/प्रकाशन और कुमाउनी भाषा को आगे बढ़ाने में भारी सहायता की है। मेरी तो यही कामना है है कि नवेंदु जी साहित्य के क्षेत्र में अपने यशस्वी पिता से कहीं आगे निकलें, क्योंकि 'पुत्रत शिष्यात् पराजयमम्'-यानी पुत्र और शिष्य से तो पराजय की ही कामना करनी चाहिए। अलमतिविस्तरेण।

-मथुरा दत्त मठपाल

महाशिवरात्रि पर्व, सम्पादक-दुदबोलि (कुमाउनी वार्षिक पत्रिका)

१० मार्च २०१३ ई. पम्पापुर, रामनगर, नैनीताल जनपद।

इजा !

इजा!
झिट घणिक तैं
ए घणि कै तैं सईं
म्या्र सामुणि, मॉंथि-मुणि
अघिल-पछिल
हर तरफ बै
मकैं च्यापी-घ्येरी
अन्यार्क गाज कैं
अत्याचार्क राज कैं
जुलम-जबरदस्ती
अर डर कैं भजै
सुफल कर म्या्र काज कैं।

इजा !
झिट घणिक तैं
करि दे मकैं निडर
निझरक-बेफिकर
बेखबर है बेर
मिं द्यखंण चांण्यूं
स्वींण,
उघड़ी आंखौंक स्वींण!
अगाश में उड़णीं स्वींण
बेअधार स्वींण
पर निश्चित स्वींण
जनूं पारि
बेफिकर है
मिं दि सकनूं टेक
चिंणि सकनूं मजबूत भिड़
लगै बेर ठङार
पुजि सकनूं लगिलौ न्यात
जरूड़ै-स्वींणौं पारि।

कि ल्येखूं

कि दि सकूं मिं
कै कैं लै?
वी,
जि
मकैं मिलि रौ
दुनी बै ।

कि सुणै सकूं मिं
कै कैं लै?
वी,
जि
पढ़ि-सुंणि-गुंणि
र्‌खौ यैं बै ।

कि ल्येखि सकूं मिं
त्वे हुं?
वी,
जि
त्वील, कि कैलै
कत्ती-कबखतै
कौ हुनलै
कि ल्यख हुनल
जरूड़ै ।

अतर-
कॉं बै ल्यूंल मिं
के, तुकैं दिंण हुं
के् सुणूंल तुकैं नईं?
के् ल्यखुंल त्वे हुं
अलगै
य दुनी है !
मिं, के
परमेश्वर जै कि भयूं ।

अच्यान....

अच्यान
मकैं लागणौ-
म्या्र भितर
बरसन बै भैटी
जुग-जुगन्ा्क
द्यौ-द्या्प्त, परमेश्वर
उन्ा्र कई-सुणीं
बचन-आंखर,
बिश्वासैकि
तागत-सबत,
सगींण लागि रैंत्र
अर
जोर-जबरदस्तील
न्ां-न्ां कूनैं
धमकूनैं-लत्यूनैं
मिं कैं निग्व्ाव-गुसैंक समझि
भबर्यूंण-कुकर्यूंण
लुटंण, धरम भ्रष्ट करंण हुं
पाजींण ल्ागि ग्येईं, खम्म कै
म्या्र भितर-निमखंण
जबरदस्तीक जा पौंण-धो टरकूंण
झुट, बेइमान, अलच्छणि
राकस!

अच्यान
मकैं लागणौ
य मैलि हौ
मकैं उड़ै द्यौ्ल
य कचुव पांणि
मकै बगै द्यौ्ल
पर,
मिं, फिर लै
आपंण विश्वासौक् दि
निमांण नि द्यूंल
आस्ौक खाम
उखड़ण नि द्यूंल
मकैं बिश्वास छु।
किलैकी-मिं,
द्येखि सकनूं

स्वीण
अर स्वीण द्रयखणाक तैं
अर स्वीण टुटंण पारि
जसि तागत चैं
हरेक में नि हुनि
मिं में छू।

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below